Pre - Harappan Civilization

(Kalibanga, Kotdiji, Aamari)

Dr. Dilip Kumar
Assistant Professor (Guest)
Dept. of Ancient Indian History & Archaeology,
Patna University, Patna

Paper – CC-XI, Sem. – III

सिन्धु या हड़प्पा सभ्यता के प्रारम्भ के बहुत पहले इस सभ्यता के इलाके में हड़प्पा के पूर्व संस्कृति और जीवन यापन के साक्ष्य अनेक स्थलों पर हड़प्पा सभ्यता के निक्षेप के नीचे से प्राप्त हुए है। जिन हड़प्पाई स्थलों से हड़प्पा पूर्व संस्कृति के अवशेष प्राप्त हुए है, उनमें विशेष रूप से उल्लेखनीय है राजस्थान के गंगानगर जिला में अवस्थित कालीबंगा, सिन्ध प्रदेश में स्थित कोटदीजी तथा आमरी, पाकिस्तान में स्थित गोमला, रहमानदेरी और जलीलपुर तथा हरियाणा में स्थित बनवली तथा मिताथल।

कालीबंगा - राजस्थान के गंगानगर जिले में घग्घर तथा प्राचीन सरस्वती नदी के किनारे पर कालीबंगा स्थल विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। उस स्थल से गढ़ी क्षेत्र के नीचे से हड़प्पा पूर्व अवशेष मिले है जिससे विदित होता है कि गढ़ी या दुर्ग के निर्माण के पूर्व हड़प्पा संस्कृति के लोग इस क्षेत्र में बसे हुए थे। इसके पश्चात् हड़प्पाई लोग आकर बसे और गढ़ी का निर्माण किया। कालीबंगा में हड़प्पा पूर्व संस्कृति की यह बस्ती, कच्ची इंटों की किलेबंदी या सुरक्षात्मक दीवारों से घिरी थी जिसकी योजना मोटे तौर पर समान्तर चतुर्भुज जैसी थी। किलेबंदी के दो चरण देखने को मिले है। पहले चरण में इसकी मोटाई 1.9 मीटर थी पर दुसरे चरण में 3.4 मीटर चौड़ा कर दिया गया था। किलेबंदी के उतरी भाग में प्रवेश मार्ग था जिससे नदी तक पहुँच सकते थे। प्रवेश मार्ग लगभग 5 या 6 मीटर चौड़ा था। किलेबंदी या सुरक्षात्मक दीवार कच्ची ईंटों से निर्मित थे। प्रयुक्त

कच्ची ईंटों का आकार 30 x 20 x 10 cm था । प्राक हड़प्पाई ईंटों का आकार 40 x 20 x 10 cm था । ईंटों को लगाने में english band विधि का प्रयोग किया गया । यह विधि हड़प्पाई दीवारों के ईंटों के चुनाई में भी व्यवहार में लाया गया था । इस काल के निवासी कच्ची ईंटों से निर्मित मकानों में रहते थे जो मुख्य दिशाओं को ध्यान में रखकर बनाये गये थे । इस काल की एक गली 1.5 मीटर चौड़ी थी । इस चरण के औसत मकान में आंगन होता था और उसके किनारे बहुत सारे कमरे बने होते थे। आंगन में खाना पकाने का साक्ष्य मिला है । वहाँ भूमि के उपर और नीचे दोनों प्रकार के तंदूर मिले है ये तंदूर आधुनिक किस्म के तन्दुरों से मिलते- जुलते है । इस काल के लोग खेतों को हल से जोतकर अन्न उपजाते थे इसका सबसे बड़ा प्रमाण जूता हुआ खेत का अवशेष है । जूते हुए खेत के एक भाग में जोत के चिन्ह और खांचे एक दुसरे से कुछ दुरी पर है और दुसरे भाग में चिन्ह या खांचे एक दुसरे के निकट है। पूरब - पश्चिम के खांचो और जोत चिन्ह के बीच 1.90 मीटर की दुरी थी । इस इलाके में आज की तरह फसल उगाने का यह ढंग था कि कम दुरी वाले खांचो में चना बोया जाता था और ज्यादा दुरी वाली खांचों में सरसों । अन्न भण्डारण के लिए चुने से पुते बेलनाकार गड्ढे इस्तेमाल किये गये थे । पत्थर के बने blade उपकरण का विशेष व्यवहार था जो अधिक संक्या में पाए गए है । सीप, पकी मिट्टी या तांबे की चूड़ियाँ प्रयुक्त की जाति थी और विभिन्न हलके रत्नों और तांबे के मनके बनाये जाते थे । पकी मिट्टी खिलौने, पहिये और मवेशी की अस्थियों के अन्वेषण से बैलगाड़ी के अवशेष का अप्रत्यक्ष साक्ष्य मिलता है । पकी मिट्टी के कूबड़ वाले बैल के नमूने भी मिले है । कम से कम 6 प्रकार के चित्रित एवं गैर चित्रित मृदभांड इस्तेमाल होते थे चाक पर बने मृदभांड लाल से लेकर गुलाबी रंग के थे। इसके सतह पर काले और सफ़ेद मिश्रित रंगों से अलंकरण किया गया है जिन पर विभिन्न प्रकार के चित्रित अभिप्राय है यथा हिरण, सांड, बिच्छु, बतख आदि । कुछ पर

पीपल के पतों का भी अंकन है । यह स्थल भूकम्प के कारण त्याग दी गई थी इस ताल पर रेत की एक परत मिलती है । कालीबंगा के इस चरण का जीवन 3000 ई. पू. के मध्य जितना पुराना है ।

कोटदीजी - इस संस्कृति का दूसरा प्रमुख स्थल सिन्ध प्रदेश में स्थित कोटदीजी है । यह स्थल खेरपुर नामक नगर से 24 km दक्षिण और मोहनजोदड़ो से 41 km पूरब में है । इस स्थल पर उत्खननों से हड़प्पा पूर्व संस्कृति के अवशेष मिले है जिसे कोटदीजी संस्कृति की संज्ञा दी गई है । उत्खनन के द्वारा प्रकाश में लाये 16 परतों में 12 कोटदीजी संस्कृति के है । इसमें उपर की एक परत 13 परिवर्तन काल के द्योतक है तथा सबसे उपर की तीन परतें सिन्धु सभ्यता के उपकरण सामग्रियों से युक्त है । इस स्थल को हड़प्पा पूर्व बस्ती, किलेबंदी या सुरक्षात्मक दीवारों से घिरी थी जो कच्ची ईंटों से निर्मित थी । इसकी दीवारों की चौड़ाई 1.5 मीटर थी । प्रयुक्त ईंटों का आकार 30 x 20 x 10 cm था । ईंटों की चुनाई में english bond विधि का व्यवहार हुआ था । परन्तु घरों की नीव में चुने पत्थर का प्रयोग किया गया है । चाक पर बने मृदभांड की पृष्टभूमि का रंग गुलाबी से लेकर लाल है। देवता की आकृति विशेष रूप से उल्लेखनीय है । मिट्टी या तांबे की बनी चुदियोंके नमूने भी मिले है । कुछ हड़प्पाई संस्कृति के तत्व भी इसके साथ पाए गए है जैसे पक्की मिट्टी के त्रिकोण पिंड आदि । कोटदीजी के इस चरण का जीवन संभवतः ई. पू. 3000 के प्रथम अंश या भाग जितना पुराना है ।

आमरी - इस प्रदेश का दूसरा प्रमुख स्थल आमरी है जो मोहनजोदड़ो से 100 मील दक्षिण की ओर सिन्धु नदी के दाहिने किनारे पर अवस्थित है जहाँ से हड़प्पा संस्कृति के अवशेष पाए गए है । इस स्थल से प्राप्त अवशेष लगभग तीन काल के थे -

(i) प्रथम काल के संस्कृति को आमरी संस्कृति की संज्ञा दी गई ।

(ii) द्वितीय काल की संस्कृति में आमरी तथा हड़प्पा के तत्व है ।

(iii) तृतीय काल की संस्कृति विशुद्ध रूप से चार उपकालों में बाँटा गया है।

प्रथम उपकाल के अधिकांश मृदभांड हस्तनिर्मित है। चाक निर्मित मृदभांडो के किनारे पतले आकार के है। काले रंग से ज्यायमितीय अलंकरण अभिप्राय संजोये गए है अन्य पुरावशेषों में फलक, गोलियां, मिट्टी के मनके एवं तांबे के एक टुकड़े का उल्लेख किया जा सकता है। ज्ययामितीय रूप से चित्रित बर्तनों के आलावा चर्ट पत्थर के बने मनके, चूड़ियाँ तथा सीप की चूड़ियाँ पायी गई है।

द्वितीय उपकाल में कच्ची ईंटों से निर्मित मकानों के अवशेष पाए गये है। इस काल में चाक - निर्मित मृदभांडो की संख्या में बृद्धि परिलक्षित होती है। इस आधार पर तश्तरी का व्यवहार आरंभ कर दिया गया था। नवीन अलंकरण अभिप्रायों में सिगमा, चेक, लटकन, हीरक तथा हिरण के सींग आदि की गणना की जा सकती है। चार्ट पत्थर के blade तथा कई अन्य उपकरणों का व्यवहार होने लगा था।

तृतीय उपकाल आमरी के विकास का चरमोत्कर्ष काल है। इस काल में दो प्रकार के आवास मिले। प्रथम प्रकार के आयताकार मकान के फर्श मिट्टी के बने हुए थे तथा इसमें दरवाजे की व्यवस्था थी। दुसरे प्रकार का भवन छोटे - छोटे सेलनुमा कमरों में विभाजित था। इसका व्यवहार प्रमुखतः सामग्री रखने में होता था। मृदभांडो पर द्विरंगी तथा तिरंगी चित्रण मिलते है।

चतुर्थ उपकाल में भवन वृहत आकार के थे। इस उपकाल में बर्तनों का चित्रण लाल रंग से किया जाता था। चित्रण में सांड की आकृति विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इस काल में चित्रित अभिप्रायों में बैल एवं मत्स्य - शल्क अन्तर्भेदी वृत सिन्ध प्रदेश के आमरी और कोटदीजी दोनों जगह विशिष्ट चित्रित मृदभांड शैलियों के दर्शन होते है, जो सिन्ध तथा इससे लगे हुए क्षेत्रों में अनेक स्थलों पर पाए गए है।